ऐसी कोई जाति नहीं है जो किसी न किसी जाति को अपने से छोटी जाति का नहीं मानती। ऊँच नीच का यह भेदभाव शहरों में शिक्षा के प्रचार-प्रसार से कुछ कम हुआ है किन्तु गाँवों में अब भी शोचनीय स्थिति है। और यह इसलिए है क्योंकि निम्न कही जानेवाली जातियों ने इसे अपनी नियति मानकर स्वीकार कर लिया है। ऐसा नहीं है कि यह कुप्रथा सिर्फ ब्राह्मणों ने ही कायम रखी है। अन्य सवर्ण जातियाँ भी इसमें पीछे नहीं हैं। पंडितजी को बैठाने के लिए दुखी की पत्नी किसी अन्य जाति के यहाँ से खटिया (चारपाई) माँगने की सलाह देती है तो दुखी कहता है- "ठकुरानेवाले (ठकुराने = वह टोला जहाँ ठाकुर (राजपूत) रहते हों) मुझे खटिया देंगे! आग तक तो घर से निकलती नहीं, खटिया देंगे। कैथाने (कायस्थ टोला) में जाकर एक लोटा पानी माँगूँ तो न मिले।" इस परंपरा में निम्न कही जानेवाली जातियों के लिए कौन सा मार्ग बचता है सिवा इसे स्वीकारने के। पंडितजी बेगार तो कराते हैं पर दुखी को खाने को कुछ नहीं देते। पंडिताइन थोड़ा बहुत देना भी चाहती हैं तो पंडितजी मना कर देते हैं। और पंडिताइन छुआ छूत मानने में पंडितजी से भी दो हाथ आगे हैं। वे दुखी को चिलम पीने के लिए आग का टुकड़ा देती हैं तो पाँच हाथ की दूरी से! आग की एक बड़ी चिनगारी दुखी के सिर पर पड़ जाती है तो दुखी की क्या प्रतिक्रिया होती है यह भी देखिए — "उसने मन में कहा, यह एक पवित्र ब्राह्मन के घर को अपवित्र करने का फल है। भगवान ने कितनी जल्दी फल दे दिया। इसी से संसार पंडितों से डरता है!" दुखी का परिचित एक गोंड़ कहता है कि पंडितजी से खाना माँग लो तो वह निःस्पृह भाव से उत्तर देता है - "कैसी बात करते हो चिखुरी, (गोंड़ का नाम) ब्राम्हन की रोटी हमको पचेगी!' इस मानसिकता के सहारे दुखी चमार जैसे लोगों के दुखों का अंत भला कैसे होगा? पंडितजी जितनी छुआछूत मानते हैं- दुखी चमार उससे भी दो हाथ आगे बढ़कर उसका पालन करता है। तभी तो कहा गया है- अन्याय करने से ज्यादा दोषी अन्याय सहनेवाला होता है। अन्यायी के विरुद्ध यदि प्रभावित लोग इकट्ठे हो जायें तो सहज में ही क्रांति आ सकती है। इसकी एक छोटी सी झलक प्रेमचन्द ने इस कहानी में दर्शायी है। आप इसे प्रेमचन्द का सुझाया मार्ग भी कह सकते हैं।

चिखुरी गोंड़ (गोंड़ एक निम्न जाति है) प्रेमचन्द की आशा का प्रतीक है। वह शोषण के चक्र को अच्छी तरह से समझता है और इसका तोड़ भी जानता है। 'चिखुरी' शब्द 'चीखुर' का अपभ्रंश (बिगड़ा हुआ रूप) है। चीखुर गिलहरी को कहते हैं जो देखने में तो छोटी होती है पर तीव्रता से अपने काम करती है। वह फुर्तीली होती है और सहज

में हार नहीं मानती। संभवतः 'चिखुरी' गोंड़ भी बचपन में दुबला पतला रहा होगा। उसकी कदकाठी को देखकर उसका ऐसा नामकरण हो गया होगा। जो भी हो, वह इस कहानी का एक ऐसा पात्र है जो मानवता में विश्वास को दृढ़ करता है। वह दुखी को चिलम और तम्बाकू देता है और उसके मन पर पड़े अज्ञानता के पर्दे को उठाने का प्रयास करता है। जब दुखी संतुष्ट भाव से कहता है कि पंडित की रोटी हमें भला कैसे पचेगी तो चिखुरी समझाता है — "पचने को तो पच जाएगी, पहले मिले तो। मूँछों पर ताव देकर भोजन किया और आराम से सोये, तुम्हें लकड़ी फाड़ने का हुक्म लगा दिया। जमींदार भी कुछ खाने को देता है। हाकिम (बड़ा अफसर) भी बेगार लेता है, तो थोड़ी बहुत मजूरी देता है। यह उनसे भी बढ़ गये, उस पर धर्मात्मा बनते हैं।" ये वाक्य प्रेमचन्द के हृदय के उद्गार हैं। जमींदारी प्रथा को सर्वाधिक क्रूर माना जाता है और अफसरशाही के क्या कहने। लेकिन भारतीय समाज में शोषण का सबसे बड़ा कारण है जाति प्रथा। जाति के आधार पर व्यक्ति जिस हद तक व्यक्ति का शोषण कर सकता है उसका कोई जवाब नहीं। चिखुरी ने शोषितों को इकट्ठा करके उन्हें चुनौती देने लायक बनाने की ठानी। वह जानता था कि जब तक शोषित संगठित नहीं होंगे तब तक सवर्ण जाति के लोग उनका शोषण ऐसे ही करते रहेंगे। शोषण भी केवल निम्न वर्ग के लोगों का स्पर्श किया हुआ, उपला (गोईठा) भूसा, लकड़ी लेने में कोई दिक्कत नहीं पर उसके हाथ का छुआ सीधा (आटा-दाल वगैरह) भी नहीं लेते। दुखी की मृत्यु के पश्चात चिखुरी ने दलितों को संगठित करना प्रारंभ किया। वह जानता था कि ये लोग भय से ही शासित हो सकते हैं। "इधर गोंड ने चमरौने में जाकर सबसे कह दिया - खबरदार, मुर्दा उठाने मत जाना। अभी पुलिस की तहकीकात होगी..... लाश उठाओगे तो तुम भी पकड़े जाओगे। .... पण्डितजी ने चमारों को बहुत धमकाया, समझाया, मिन्नत की; पर चमारों के दिल पर पुलिस का रोब छाया हुआ था, एक भी न मिनका।" यदि पुलिस का रोब न छाया होता तो वे पंडितों के कहे में आ जाते। लेकिन इस संगठन का कोई फल नहीं निकला। कहानी का अंत दुखी की लाश की दुर्गति के चित्रण से होता है।

कहने की आवश्यकता नहीं है कि प्रेमचंद ने इस कहानी में अपनी भाषा पात्रानुकूल रखी है। पात्रों के अनुकूल भाषा ने कहानी में सजीवता और स्वाभाविकता कायम रखी है। जहां उन्हें अवसर मिला है वे चुटकी लेने से नहीं चूकते। पंडित घासीराम की छवि का अंकन देखें — 'छोटा-सा गोल-मटोल आदमी, चिकना सिर, फूले गाल, ब्रह्मतेज से प्रदीप्त आँखें। रोरी और चंदन देवताओं की प्रतिभा प्रदान कर रही थी।" यह वर्णन पढ़कर हँसी आये बिना नहीं रुकती। यह लोकप्रिय टिप्पणी है अतः इसमें उन्होंने अपनी भाषा का स्तर प्रस्तुत किया है। कहानी के अंत में उनकी

आभा हृदयहीन व्यक्ति की आँखों से भी अश्रु निकालने में समर्थ है -
"पंडितजी ने रस्सी पकड़कर लाश को घसीटना शुरू किया और गाँव के बाहर घसीट ले गये। वहाँ से आकर तुरन्त स्नान किया, दुर्गापाठ पढ़ा और घर में गंगाजल छिड़का।

उधर दुखी की लाश को खेत में गीदड़ और गिद्ध, कुत्ते और कौए नोच रहे थे। यही जीवन पर्यन्त की भक्ति, सेवा और निष्ठा का पुरस्कार था।" दुखी ने जीवन भर ईश्वर की भक्ति की थी, हिन्दू वर्ण व्यवस्था के प्रति निष्ठा कायम रखी थी और इसीका पालन करते हुए सवर्णों की सेवा की थी। फिर भी उनके साथ इतना बुरा हुआ इसका अर्थ है कि ये सिद्धांत गये बीते हैं। इसपर चलने से कुछ नहीं मिलनेवाला। मानवतापर श्रद्धा कायम रख कर किसी प्राणीका उद्धार संभव है न कि छुआछूत और शोषण कर किसी व्यक्ति या समुदाय का भला हो सकता है।

[signature]

mobile no. 9431881251

डॉ॰ करुणा राय
एसोशिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
श्री गुरु गोविन्द सिंह कालेज
पटना सिटी
e-mail- karuna_1812@yahoo.co.in

स्नातक हिन्दी प्रतिष्ठा प्रथम वर्ष
पत्र- 2
गद्य विधायें - कहानी

सद्गति (प्रेमचंद) का कलात्मक वैशिष्ट्य

प्रेमचंद की कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता है उनकी सहजता। बड़ी से बड़ी बात भी वे जिस सहजता से कह जाते हैं उससे व्यक्ति उनकी कहानी कला पर मुग्ध हो जाता है। 'सद्गति' में उनकी यह कलात्मकता और भी उभर कर पाठकों के सामने आती है। 'गति' का अर्थ होता है - जाना, गमन। भारतीय संस्कृति में व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात उसके आत्मा के (परलोक) गमन को गति कहते हैं। इसमें 'सद्' उपसर्ग लगा देने से उसका अर्थ हो जाता है- अच्छी तरह से (परलोक) गमन। कहानी का शीर्षक ही पाठकों में उत्सुकता जगाता है कि किस व्यक्ति का किस स्थिति में परलोक गमन होता है, यह कहानी में कौन जल्द से जल्द ज्ञात होगा। आपलोगों ने कक्षा में यह पाठ पढ़ा है इसलिए आपको यह ज्ञात होगा कि प्रस्तुत कहानी में दुखी चमार की मृत्यु का कारुणिक चित्र है। कथानक आपको विदित ही होगी जिसमें यह बताया गया है कि दुखी चमार अपनी बिटिया की सगाई के लिए पंडित घासीराम से मुहूर्त निकलवाने जाता है और वहां पंडितजी बेगार में इतना खटाते हैं कि वह मर जाता है। मरने के पश्चात पंडित जी उसकी लाश को एक खेत में घसीट कर डाल देते हैं जहाँ मांसाहारी पक्षी और जानवर उसे नोच-नोचकर खा जाते हैं। यह तो जातिगत आधार पर शोषण और क्रूरता का जबरदस्त उदाहरण हुआ। तब क्या प्रेमचंद ने इसीलिए यह कहानी लिखी थी? बिल्कुल नहीं! फिर तो यह एक समाचार पत्र की खबर बनकर रह जाती। प्रेमचंद ने इस शोषण के कारणों पर विचार किया है और इससे निजात कैसे पाया जाय उसकी एक हल्की झलक भी दिखलाई है। आपलोग बारी-बारी से कहानी की इन दोनों विशेषताओं को जिस कला के साथ वर्णित किया गया है उसे देखें।

सर्वप्रथम हम शोषण के कारणों पर विचार करेंगे जिसे प्रेमचंद ने बिना कथा में उपस्थित हुए पात्रों के माध्यम से व्यक्त किया है। जैसा कि आप सभी जानते हैं हिन्दू धर्म में जातिगत श्रेष्ठता और निम्नता विद्यमान है। इसके अनुसार ब्राह्मण सर्वश्रेष्ठ तथा अनुसूचित जाति के लोग निम्न पायदान पर हैं। यह सिद्धांत उनकी रग-रग में भरा हुआ है। 'संस्कृति के चार अध्याय' पुस्तक में रामधारी सिंह दिनकर ने लिखा है कि भारत में